



पाठ-१

देव शास्त्र गुरु

सारिका छाबड़ा, यंग जैन स्टडी ग्रुप, इन्दौर



99260-40137

पूजन किनकी की जाती है ?

देव



शास्त्र



गुरु



देव कौन हैं ?

- जैनधर्म में कोई व्यक्ति विशेष देव नहीं है
- जिनमें भी देव के गुण पाये जाते हैं वे देव हैं
- सच्चा देव वही है, जो वीतरागी, सर्वज्ञ और हितोपदेशी हो

बुद्ध वीर जिन हरि हर ब्रह्मा.....



देव का लक्षण

आप्तेनोच्छिन्नदोषेण, सर्वज्ञेनागमेशिना ।
भवितव्यं नियोगेन, नान्यथा ह्याप्तता भवेत् ॥

आप्तेन	आप्त (देव) को
उच्छिन्नदोषेण	दोष रहित (वीतरागी)
सर्वज्ञेन	सर्वज्ञ
आगमेशिना	आगम के ईश (स्वामी) = हितोपदेशी
भवितव्यं	होना चाहिये
नियोगेन	नियम से
नान्यथा	नहीं अन्य प्रकार
ह्याप्तता भवेत्	आप्तपना हो सकता है

वीतरागी

जो मोह, राग, द्वेष से रहित हो

जो 18 दोषों से रहित निर्दोष हो

क्षुत्पिपासाजरातंक जन्मान्तकभयस्मयाः ।
न रागद्वेषमोहाश्च यस्याप्तः स प्रकीर्त्यते ॥

18
दोषों
से
रहित है

- | | |
|----------------|--------------------|
| 1.क्षुधा | 10.द्वेष |
| 2.तृषा | 11.मोह |
| 3.जरा/वृद्धपना | 12.चिंता |
| 4.आतंक/रोग | 13.रति |
| 5.जन्म | 14.निद्रा |
| 6.मरण | 15.विस्मय(आश्चर्य) |
| 7.भय | 16.शोक |
| 8.स्मय(मद) | 17.स्वेद(पसीना) |
| 9.राग | 18.खेद(व्याकुलता) |

वीतरागता की आवश्यकता

- जो स्वयं दोषों सहित हो वह अन्य को निराकुल, निर्दोष, सुखी नहीं कर सकता ?
- दोषों की बाधा से जो स्वयं महादुःखी वह ईश्वर कैसे होगा?
- भय से जिसके शस्त्रादि का ग्रहण, शत्रु विद्यमान, वह निराकुल कैसे हो ?
- कामी-रागी निरंतर अन्य के वश रहने से सच्चा वक्ता नहीं बन सकता
- जो स्वयं जन्म-मरण सहित हो वह संसार-परिभ्रमण का अभाव नहीं करा सकता है ।

सर्वज्ञ

सभी द्रव्यों और

उनकी तीनों काल की पर्यायों को

युगपत्

प्रत्यक्ष (सीधे आत्मा से) जानते हैं

सर्वज्ञ किन्हें जानते हैं ?

सूक्ष्म

परमाणु आदि

दूरवर्ती

मेरु पर्वत, स्वर्गादि - क्षेत्र से दूर

अंतरित

राम रावणादि - काल से दूर

हितोपदेशक

हित का उपदेश करने वाले

द्वादशांगरूप आगम के मूलकर्ता

इसलिये आगम के स्वामी

जो
वीतरागी
और सर्वज्ञ
होते हैं उन
ही का
उपदेश
हितरूप
होता है

वीतरागता
के कारण
उपदेश

अच्छा

सर्वज्ञता के
कारण
उपदेश

सच्चा



प्रश्न?

किस क्रम से
ये गुण प्रकट
होते हैं?

सर्वज्ञता
वीतरागता
के पहले क्यों
नहीं?

हितोपदेशी
वीतरागता-
सर्वज्ञता के पहले
क्यों नहीं?

सही/ गलत बताइये

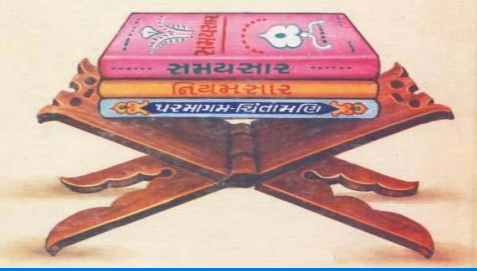
- जो हमारी मनोकामना पूरी कर दे, वह देव है ।
- जो हमारी पूजा से प्रसन्न हो जाये, वह देव है ।
- जो exam में pass करा दे, वह देव है ।
- जिससे हमें हमेशा डर लगा रहे, वह देव है ।
- जिससे हमें संसार से छूटने का रास्ता मिले, वह देव है ।
- जो हमारी स्तुति करने से प्रसन्न नहीं होते, वह देव है ।



शास्त्र का लक्षण

आप्तोपज्ञमनुल्लङ्घ्यमदृष्टेष्टविरोधकम् ।
तत्त्वोपदेशकृत - सार्व शास्त्रं कापथघट्टनम् ॥

आप्तोपज्ञं	देव के द्वारा कहा गया
अनुल्लङ्घ्यम्	वादी-प्रतिवादि के द्वारा उल्लंघित न हो
अदृष्टेष्टविरोधकम्	प्रत्यक्ष और अनुमान द्वारा बाधित न हो
तत्त्वोपदेशकृत	तत्त्व का कथन करने वाले हो
सार्व	सब जीवों को हितरूप हो
कापथघट्टनम्	मिथ्यामार्ग का निषेध करने वाला हो
शास्त्रं	शास्त्र है



शास्त्र

- ❖ उन ही देव की वाणी को शास्त्र कहते हैं -
- ❖ वह वीतरागी है, अतः उनकी वाणी भी वीतरागता की पोषक होती है।
- ❖ राग को धर्म बताये वह वीतरागी की वाणी नहीं।
- ❖ उनकी वाणी में तत्त्व का उपदेश आता है।
- ❖ वह वाणी स्यादवाद् से चिह्नित होती है।

वाचने – सुनने योग्य शास्त्र

- जो मोक्षमार्ग का प्रकाश करे
- राग- द्वेष मोह भावों का निषेध करे
- साक्षात् अथवा परंपरा से वीतरागभाव का पोषण करे
- श्रृंगार, हिंसा, युद्ध का पोषण ना करे
- अतत्त्व श्रद्धान का पोषण ना करे

सही/ गलत

- जो पुस्तक संस्कृत में लिखी हो, वह शास्त्र है ।
- जो बहुत पुरानी(1000 years old) हो, वह शास्त्र है।
- जो मोटी हो (lot of pages), वह ही शास्त्र है ।
- जो वीतरागता का पोषण करे, वह ही शास्त्र है ।
- जिसे भगवान ने लिखा हो, वह ही शास्त्र है ।



गुरु का लक्षण

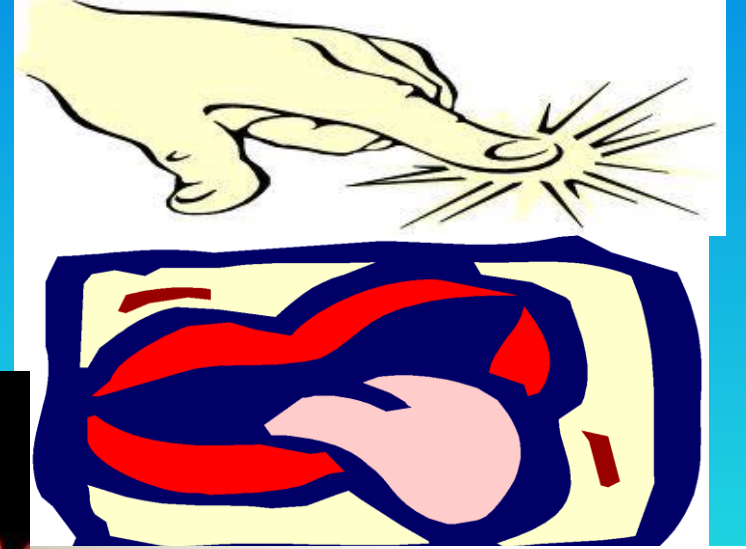
विषयाशावशातीतो निरारम्भोऽपरिग्रहः ।
ज्ञानध्यानतपोरक्तः तपस्वी सः प्रशस्यते ॥

विषयशावशातीतो	विषयों की आशा के वश से रहित
निरारम्भो	हिंसा से रहितपना
अपरिग्रह	परिग्रह से रहित
ज्ञानध्यानतपोरक्तः	ज्ञान, ध्यान, तप में लीन
तपस्वी सः	वह गुरु
प्रशस्यते	प्रशंसनीय है

विषयाशावशातीतो

विषय + आशा + वश + अतीत

विषयों की आशा के वश से रहित



सारिका छाबड़ा, यंग जैन स्टडी ग्रुप, इन्दौर

निरारम्भो

• निः + आरंभः

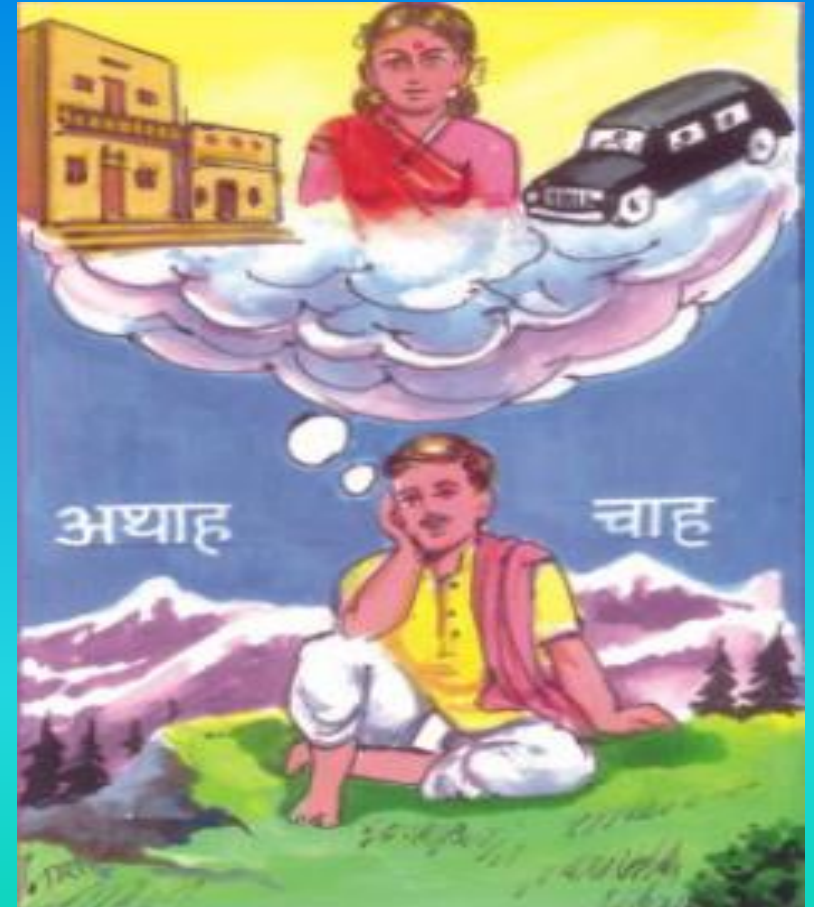
➤ निः = सर्व प्रकार से रहितपना

➤ आरंभ = हिंसा



अपरिग्रही

- अ + परिग्रही
- परिग्रह से रहित



ज्ञान-ध्यान-तपोरक्त

- ज्ञान

- ध्यान :- धर्म्य ध्यान

- तप :- अंतरंग-बहिरंग तप

में लीन

क्या विद्या गुरु की भी पूजा होती है?

नहीं

यथायोग्य आदर करना चाहिये

क्या नग्नता से पूज्यपना है ?

दिगम्बर गुरु नग्न ही होते हैं

परंतु पूज्यपने का लक्षण पहले जो
बताया गया है, वह है

सही/ गलत

- जो 10 उपवास करे, वह गुरु है ।
- जो वस्त्र सहित हो, वह गुरु है ।
- जो पत्नि सहित हो, वह गुरु है ।
- जो एक बार भोजन करे, वह गुरु है ।
- जो 28 मूलगुण पालन करे, वह गुरु है ।
- जो नग्न रहे, वह गुरु है ।
- जो जैन है, वह गुरु है ।